International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(II), January - March, 2022, pp.45-48

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

गोपेश कुमार शर्मा*
डॉ. सविता गुप्ता**

iLrkouk

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जो अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है। मनुष्य प्रतिक्षण कुछ न कुछ सीखता रहता है। इसका समस्त जीवन ही शिक्षा है। अतः शिक्षा एक निरन्तर तथा गतिशील प्रकिया है। जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे बुद्धिमान, चरित्रवान बनाती है उसी प्रकार दूसरी ओर अपनी समाजशास्त्रीय प्रकृति के रूप में समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। राष्ट्र की प्रगति का आधार शिक्षा को ही माना जाता है। इसी आधार पर शिक्षा आयोग (1964–66) ने कहा है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण उनकी कक्षाओं में हो रहा है।''

"शिक्षा सीखने की क्रिया द्वारा व्यक्ति का विकास है, जो उसके शारीरिक विकास से भिन्न है।

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली विकास की प्रक्रिया है। षिक्षा जीवन से घनिष्ठ रूप से संबन्धित है। षिक्षा वह संस्कृति है जो हर पीढ़ी को इस प्रयोजन में प्रदान की जाती है कि वह कम से कम इसे उसी रूप में बनाये रखे और यदि सम्भव हो तो जो वृद्धि का स्तर प्राप्त हो चुका है उसे उपर उठाये।"[1]

षिक्षा सतत् अनुभवों के पुनर्संगठन एवं पुनर्रचना की प्रक्रिया है। "अनुभव के द्वारा हमारे व्यवहार में जो भी परिवर्तन आते है, वे सभी शिक्षा के फलस्वरूप है। शिक्षा का अर्थ ही अनुभवों का निर्माण एवं पुनर्निर्माण है, और इस दृष्टि से पाठशाला के बाहर भी जो अनुभव प्राप्त किए जाते है, वे सभी शिक्षा के अंग है। शिक्षा ऐसी क्रिया अथवा प्रयास है, जिसमें मानव समाज के अधिक परिपक्व लोग, न्यून परिपक्व व्यक्तियों की अधिकाधिक परिपक्वता के लिए प्रयास करते है तथा इस प्रकार मानव जीवन को अच्छा बनाने में योगदान करते है।"[2]

''जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वांगींण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्रकार दूसरी और शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भाँति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हदय में देश–प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है। जब ऐसी भावनाओं तथा आदर्शों से भरे हुए बालक तैयार होकर समाज अथवा देश की सेवा का व्रत धारण करके मैदान में निकलेंगे तथा अपने जीवन में त्याग से अनुकरणीय कार्य करेंगे तो समाज भी निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढता ही रहेगा। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास में शिक्षा परम आवश्यक है।''[3]

---

* शोध छात्र, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** प्रोफेसर, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

1 माथुर, एस.एस. (2010) उभरते भारतीय समाज में षिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेषन आगरा–2, पेज नं. 04–05

2 ओड, एल.के., (2012), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, पृष्ठ सं0 – 203

3 सक्सेना, एन.आर., चतुर्वेदी, शिखा, स्वरूप, (2012), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ पृष्ठ सं0 – 03, 09, 10

कक्षा में एक छात्र की प्रगति या विफलता कई कारकों पर निर्भर करती है, जैसे विषय में रूचि, सीखने के लिये प्रेरणा, अध्ययन सुविधायें, विद्यालय वातावरण, गृह वातावरण, विद्यार्थियों की स्वयं की अध्ययन की आदतें, शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन इत्यादि। यहाँ तक कि अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिये छात्रों को हर प्रकार से समझाया जाता है फिर भी परिणाम संतुष्टि से दूर हैं। इन मामलों की दयनीय स्थिति के लिये मुख्य कारणों में सम्भवतः गृह वातावरण, विद्यालय वातावरण, विद्यार्थियों की निम्न अध्ययन की आदतें और कुसमायोजन है।

किसी षिक्षार्थी के विकास में उसके परिवार का महत्वपमर्ण योगदान होता है। पूर्व शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि परिवार के सभी सदस्यों के व्यक्तित्व, भाषा, रहन–सहन, पारिवारिक आजीविका आदि का बालक और उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। गृहवातावरण के फलस्वरूप विद्यार्थी अपने परिवार की संस्कृति से भी प्रभावित होता है। परिवार एक ऐसी संस्था भी है, जिसमें अपनी परम्पराओं, रीति–रिवाज आदि का विकास कर उन्हें आने वाली पीढ़ियों को दिया जाता है। परिवार के सभी सदस्यों के अपने दायित्व होते है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक आविष्कारों तथा अनुसंधानों के कारण विकास की गति में तीव्रता आयी है। फलतः परिवार भी प्रभावित हुये हैं। जिसके कारण परिवार के कर्तव्यों में भी कमी आई है।

अच्छे शैक्षिक उपलब्धि स्तर व सुसमायोजन से विद्यार्थी का चरित्र ऊँचा उठता है, यदि पारिवारिक वातावरण में सच्चाई, ईमानदारी परिश्रम तथा कर्तव्यपरायणता आदि गुण हैं, बालक सुसमायोजित हैं तो ये गुण विद्यार्थियों में स्वतः ही उत्पन्न हो जाते हैं।

यदि बालक का पारिवारिक वातावरण उचित होता है तो यह बालक के अध्ययन को भी प्रभावित करता है, जिसका परिणाम उसके विद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शन व शैक्षिक उपलब्धि के रूप में दिखाई देता है साथ ही शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में पारिवारिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि विद्यार्थियों को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण मिलता है, तो उनमें बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है।

'kf{kd miyfC/k

शैक्षिक उपलब्धि अत्यन्त व्यापक व प्रषस्त शब्द है जो विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को स्पष्ट करता है। शैक्षिक उपलब्धि अंग्रेजी के दो शब्दों Academic Achievement से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है शैक्षिक उपलब्धि। शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। शिक्षा से सम्बन्धित कारकों के परिणामों से होता है। शिक्षा से संबंधित कारकों के परिणामों को शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। इसका मापन उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है।

गैरेट के अनुसार – ''उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग छात्रों के सामान्य शैक्षिक स्तर या स्थिति और किसी विशेष विषय में उनके ज्ञान का निश्चय करने के लिये किया जाता है।''[1]

शैक्षिक उपलब्धि उन क्रियाकलापों का प्राप्त परिणाम है जो उनकी विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर प्राप्त होती है जिसको प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को विद्यालय जाना पड़ता है। विद्यालय के अन्दर कक्षा–कक्ष की गतिविधियों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात किया जाता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए शिक्षा सत्र में अधिगम परीक्षाओं का उपयोग किया जाता है। परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि को निश्चित किया जाता है।

ikfjokfjd okrkoj.k

परिवार साधरणतया दादा–दादी, पति–पत्नि व बच्चों के समूह को कहा जाता है।

चार्ल्स कूले के अनुसार ''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो रक्त के आधार पर एक दूसरे से सम्बन्धित है तथा जो नातेदार है।''

---

1 अग्रवाल, जे.सी., शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005 पृ.सं. 335

परिवार : परिवार समाज की मौलिक इकाई है, परिवार को परिभाषित करते हुए etenkj ने कहा है कि ''परिवार व्यक्तियों का समूह है जो कि एक छत के नीचे रहते हैं, मूल रक्त संबंधी सूत्रों से बंधे होते हैं तथा स्थान, रूचि, कृतज्ञता की अन्योन्याश्रिता के आधार पर संबंध की चेतना रखते हैं।''[1]

रॉस के अनुसार– ''वातावरण व बाह्यशक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।''[2]

एनास्टसी के अनुसार– ''वातावरण वह प्रत्येक वस्तु है जो व्यक्ति के पैतृकों (जीन्स) के अलावा हर वस्तु को प्रभावित करती है।'' पारिवारिक वातावरण से आशय घर के उस वातावरण से है, जो बालक को जन्म से ही मिलता है, जहाँ वह अपना अधिकांश समय बिताता है। परिवार के अन्तर्गत उसके माता–पिता, भाई–बहन व अन्य सम्बन्धी (यदि संयुक्त परिवार है) जो साथ में रहते है, वह शामिल है। वह उनके साथ क्रिया–प्रतिक्रिया करता है, जो उसके विचार, व्यवहार, भाव एवं मूल्यो को निर्मित करने में महत्वपूर्ण होते है।

पेस्टोलॉजी के अनुसार ''परिवार प्यार तथा स्नेह का केन्द्र, शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान व बालक की प्रथम पाठशाला है।'' परिवार का वातावरण एवं पृष्ठभूमि बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। उसकी मनोदशा, मूल्य, कार्यक्षमता, समायोजन व उपलब्धि सभी कुछ पारिवारिक वातावरण से मूल रूप से प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक वातावरण का निर्धारण भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पारिवारिक वातावरण से ही होता है और वह भी बालक के भविष्य को विभिन्न प्रकार से निर्मित करता है। अतः परिवार का वातावरण सुखद व सौहार्द पूर्ण होने पर बालक में आत्मविश्वास, प्रसन्नता, कुण्ठारहित व्यक्तित्व, कार्य करने की इच्छा आदि धनात्मक गुण देखे जा सकते है, वरना इसके विपरीत स्थिति हो सकती है।

आर.डब्ल्यू.वाइट (1964) के शब्दो में "The environment of home must be one of unconditional love, acceptance, permissiveness, emocracy, cooperation, encouraging, tolerance and warm relationship among all the members of the its home"

बालक की शिक्षा में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक परिवार में ही जन्म लेता है, परिवार में ही बोलना सीखता है। शिक्षा का प्रारंभ परिवार से ही होता है। इस कारण परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा गया है। परिवार में बालक सबसे अधिक माँ के सम्पर्क में रहता है। इसलिये माँ को बालक की प्रथम शिक्षक कहा गया है। परिवार के अन्य सदस्यों के आचरण एवं व्यवहार का भी बालक पर प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः बालक वैसा ही बनता है जैसा उसका पारिवारिक वातावरण होता है। परिवार मानव समाज की महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें बच्चें का जन्म होता है और उसके विकास की नींव रखी जाती है। परिवार बच्चे की सर्वप्रथम शिक्षण संस्था होती है तथा माँ बच्चें की सर्वप्रथम शिक्षिका होती है। परिवार में रह कर ही बच्चा अनुकरण के द्वारा सुनना–बोलना, चलना–फिरना सीखता है साथ ही उसका शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास भी परिवार में रहकर प्रारम्भ हो जाता है।

फ्रोबेल एवं मान्टेसरी ने भी बच्चों की शिक्षा में परिवार के महत्व को स्वीकार किया है। भारतीय विद्वानों में महात्मा गाँधी, गीजू भाई आदि ने बच्चे के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया है। स्पष्ट है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार की भूमिका सर्वप्रमुख है, यदि परिवार का वातावरण स्वस्थ्य, सहानुभूतिपूर्ण और सहयोग पूर्ण होता है तो बच्चें के व्यक्तित्व का विकास सकारात्मक दिशा में होता है। वास्तव में परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। प्रत्येक परिवार का वातावरण अलग–अलग होता है, उनकी भाषा, संस्कृति, रहन–सहन, आचार–विचार, रूचियां अलग–अलग होती है। इसलिये एक परिवार का बालक दूसरे परिवार के बालक से भिन्न होता है। jsk.V का कथन है कि ''दो बालक भले ही एक ही विद्यालय में पढ़ते हों, एक से ही शिक्षकों से प्रभावित होते हों, एक सा ही अध्ययन करते हों, फिर भी वे अपने सामान्य ज्ञान, रूचियों, भाषण, व्यवहार तथा नैतिकता में अपने–अपने परिवारों के कारण जहां से वे आते हैं, भिन्न होते हैं।''[3]

---

1 सोनी, रामगोपाल (2014) : उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा, पृ.सं. 416

2 सिंह, गया (2012) अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ। पृ.सं. 62

3 त्यागी, डॉ. गुरसरनदास एवं नंद, डॉ. विजय कुमार (2009) : उदीयमान भारत में षिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा, पृ.सं. 83

okVlu के अनुसार ''हमारे पास गुणों को वंशानुक्रम से प्राप्त करने का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है। .... मुझे एक दर्जन स्वस्थ शिशु जो भली प्रकार गठित हों, दीजिए और उनके पालन के लिये मेरे द्वारा बताये निश्चित वातावरण को दीजिए, मैं उनमें से किसी की भी बिना इस बात की परवाह किये हुए कि उनके पूर्वज क्या थे और उनमें कौन सी क्षमताएं, प्रवृत्तियां, योग्यताएं, व्यवसायिक गुण एवं प्रजाति थी, मैं उन्हें निश्चित रूप से जो चाहूं– डॉक्टर, वकील, कलाकार, व्यापारी, मुखिया और यहां तक भिखारी और चोर बना सकता हूं।''[1] स्पष्ट है कि पारिवारिक जीवन का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारिवारिक वातावरण से ही बालकों में सहकारिता, सहयोग, स्नेह, भ्रातृत्व आदि सामाजिक गुणों की नीव पड़ती है।

lUnHk xzUFk lwph

1. माथुर, एस.एस. (2010) उभरते भारतीय समाज में षिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेषन आगरा–2, पेज नं. 04–05
2. ओड, एल.के., (2012), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, पृष्ठ सं0 – 203
3. सक्सेना, एन.आर., चतुर्वेदी, शिखा, स्वरूप, (2012), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ पृष्ठ सं0 – 03, 09, 10
4. अग्रवाल, जे.सी., शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005 पृ.सं. 335
5. सोनी, रामगोपाल (2014) : उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा, पृ.सं. 416
6. सिंह, गया (2012) अधिगमकर्त्ता का विकास एवं षिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ। पृ.सं. 62
7. त्यागी, डॉ. गुरसरनदास एवं नंद, डॉ. विजय कुमार (2009) : उदीयमान भारत में षिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा, पृ.सं. 83
8. दुबे, प्रो. एल. एन. एवं बरोदे, प्रो. बी. आर. (2009) : षिक्षा मनोविज्ञान, आरोही प्रकाषन, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर, प्रथम संस्करण, पृ.सं. 81

❖◆❖

1 दुबे, प्रो. एल. एन. एवं बरोदे, प्रो. बी. आर. (2009) : षिक्षा मनोविज्ञान, आरोही प्रकाषन, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर, प्रथम संस्करण, पृ.सं. 81